प्राकृतिक खेती बनी उद्यमिता का आधार

राजेंद्र नागर, दयानन्द, रशीद खान, प्रदीप कुमार और **देवी लाल जाट**

“ टिकाऊ कृषि आज केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मृदा, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने की आवश्यकता बन चुकी है। राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्र में, जहां सीमित संसाधनों के बीच खेती करना चुनौतीपूर्ण माना जाता है, वहीं झुंझुनूं जिले के डीलसर खुर्द गांव के 48 वर्षीय प्रगतिशील किसान श्री धर्मवीर खीचड ने जैविक एवं प्राकृतिक खेती अपनाकर एक नई मिसाल कायम की है। रासायनिक खेती की बढ़ती लागत और कमजोर होती मृदा की उर्वराशक्ति को समझते हुए इन्होंने पारंपरिक खेती की जगह प्रकृति आधारित खेती को अपनाया और अपनी 4 हैक्टर सीमांत भूमि को टिकाऊ कृषि मॉडल में परिवर्तित किया। निरंतर सीखने की लगन, प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन के बल पर आज वे न केवल सफल प्राकृतिक किसान बने हैं, बल्कि क्षेत्र के अन्य किसानों को भी कम लागत और पर्यावरण अनुकूल खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं। ”

बढ़ती उत्पादन लागत, कमजोर होती मृदा उर्वरता और रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बीच राजस्थान के झुंझुनूं जिले के डीलसर खुर्द गांव के 48 वर्षीय किसान श्री धर्मवीर खीचड ने प्राकृतिक एवं जैविक खेती को अपनाकर एक नई दिशा प्रस्तुत की है।

सीमांत किसान होने के बावजूद इन्होंने प्रकृति आधारित खेती को सफलतापूर्वक स्थापित किया और यह साबित किया कि कम लागत में भी टिकाऊ एवं लाभकारी कृषि संभव है। आज इनकी खेती न केवल बेहतर आय का स्रोत बनी है, बल्कि आसपास के किसानों के लिए प्रेरणा और सीख का केंद्र भी बन चुकी है।

कृषि विज्ञान केंद्र, आबूसर-333001, झुंझुनूं (राजस्थान)

प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में श्री धर्मवीर खीचड ने पारंपरिक कृषि ज्ञान और वैज्ञानिक तकनीकों का समन्वय करते हुए एक सफल एवं टिकाऊ खेती मॉडल विकसित किया है। इन्होंने रासायनिक खेती को पूरी तरह छोड़कर प्राकृतिक खेती को अपनाया तथा जीवामृत, घनजीवामृत सहित सभी आवश्यक जैविक आदानों को अपने खेत पर ही तैयार करना शुरू किया। इनकी खेती में देसी गाय आधारित कृषि प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका है, जहां गोबर एवं गौमूत्र का उपयोग मृदा की उर्वरता बढ़ाने और फसलों के पोषण हेतु किया जाता है।

इन्होंने अपने खेत को प्राकृतिक खेती के मॉडल डेमो फार्म के रूप में विकसित किया है, जहां अनाज, दलहन, सब्जियां, फल एवं पशुपालन को एकीकृत करते हुए मिश्रित कृषि प्रणाली अपनाई गई है। कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए वे पर्यावरण अनुकूल प्राकृतिक उपायों का उपयोग करते हैं। साथ ही, वे अपने ‘रसायन मुक्त’ उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इनकी सफलता से प्रेरित होकर आसपास के अनेक किसान भी प्राकृतिक खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

प्राकृतिक खेती पर रहा जोर

श्री धर्मवीर खीचड की सबसे बड़ी विशेषता पारंपरिक स्वदेशी कृषि ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर प्राकृतिक खेती का सफल एवं व्यावहारिक मॉडल विकसित करना है। इन्होंने रासायनिक खेती को पूर्णतः त्यागकर शत-प्रतिशत

पशुपालन

प्राकृतिक खेती को आत्मनिर्भर एवं टिकाऊ बनाने के लिए इन्होंने पशुपालन को भी कृषि प्रणाली का अभिन्न हिस्सा बनाया है। इनके खेत पर 12 देसी गायों का पालन किया जाता है, जिनके गोबर एवं गौमूत्र का उपयोग जीवामृत, घनजीवामृत एवं अन्य जैविक आदान तैयार करने में किया जाता है। इससे खेती की लागत कम होने के साथ मृदा की उर्वरता में भी सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त दूध एवं इससे बने उत्पाद घरेलू आय का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन्होंने अतिरिक्त आय एवं जैविक खाद की उपलब्धता के लिए कुक्कुट पालन को भी अपनाया है। इस प्रकार फसल उत्पादन एवं पशुपालन का एकीकृत मॉडल इनकी प्राकृतिक खेती प्रणाली को अधिक टिकाऊ, लाभकारी एवं पर्यावरण अनुकूल बनाता है।

कद्दूवर्गीय सब्जियों में सरसों के भूसे की मल्चिंग

प्राकृतिक खेती अपनाई तथा खेती को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। वे जीवामृत, घनजीवामृत एवं अन्य सभी जैविक आदान स्वयं अपने खेत पर ही तैयार करते हैं, जिससे खेती की लागत में कमी आने के साथ उत्पादों की गुणवत्ता भी बेहतर हुई है।

प्राकृतिक खेती के आधार के रूप में वे स्थानीय देसी गाय के गोबर एवं गौमूत्र का उपयोग करते हैं, जिससे मृदा की उर्वराशक्ति एवं जैविक सक्रियता में सुधार हुआ है। इन्होंने अपने खेत को एक मॉडल प्रदर्शन फार्म के रूप में विकसित किया है, जहां आसपास के किसान आकर प्राकृतिक खेती की तकनीकों को व्यावहारिक रूप से सीखते हैं।

टिकाऊ एवं लाभकारी कृषि के उद्देश्य से इन्होंने विविधीकृत कृषि प्रणाली अपनाई है, जिसमें अनाज, दलहन, सब्जियां, फल एवं पशुपालन को एकीकृत किया गया है। फसलों की सुरक्षा हेतु रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर पर्यावरण अनुकूल प्राकृतिक कीट एवं रोग प्रबंधन उपायों का उपयोग किया जाता है।

श्री खीचड 'रसायन मुक्त' एवं प्राकृतिक रूप से उत्पादित कृषि उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाकर बेहतर बाजार एवं उचित मूल्य प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही वे किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक करने, प्रशिक्षण एवं प्रेरणा देने में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इनका कार्य प्राकृतिक खेती में नवाचार, नेतृत्व क्षमता और टिकाऊ कृषि के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

श्री धर्मवीर खीचड प्राकृतिक खेती में मृदा की उर्वरता बनाए रखने एवं फसलों की स्वस्थ वृद्धि के लिए जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत जैसे जैविक आदानों का नियमित उपयोग करते हैं। बीजजनित रोगों से संरक्षण हेतु बीजों का उपचार प्राकृतिक जैविक आदानों से किया जाता है, जिससे अंकुरण क्षमता एवं पौधों की प्रारंभिक वृद्धि बेहतर होती है।

फसलों में कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए वे रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर नीमास्त्र, अग्निास्त्र एवं दशपर्णी अर्क जैसे प्राकृतिक जैविक घोलों का प्रयोग करते हैं। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ उत्पादन की गुणवत्ता भी सुरक्षित रहती है।

मृदा की सेहत सुधारने, कीटों के प्रकोप को कम करने तथा जोखिम घटाने के उद्देश्य से फसल विविधीकरण एवं मिश्रित खेती प्रणाली अपनाई गई है। खेतों में फसल अवशेषों द्वारा मल्चिंग की जाती है, जिससे मृदा में नमी लंबे समय तक बनी रहती है तथा लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ती है।

फार्म पर विकसित क्षेत्रीय नवाचार केंद्र

श्री धर्मवीर खीचड ने अपने फार्म पर प्राकृतिक खेती आधारित एक क्षेत्रीय नवाचार केंद्र विकसित किया है, जो प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं जैविक आदान निर्माण का प्रमुख केंद्र बन चुका है। यह केंद्र किसानों को प्राकृतिक खेती की व्यावहारिक जानकारी देने के साथ-साथ आत्मनिर्भर कृषि प्रणाली विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहां जीवामृत, बीजामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र एवं अग्निअस्त्र जैसे विभिन्न प्राकृतिक घोल एवं जैविक आदान तैयार किए जाते हैं। इन आदानों के सुरक्षित भंडारण हेतु स्टोरेज टैंक एवं मृदा के बर्तनों का उपयोग किया जाता है। फार्म पर वर्मीकम्पोस्ट, गोबर खाद एवं फार्म यार्ड मैन्योर तैयार करने के लिए अलग इकाइयां स्थापित की गई हैं। यह केंद्र आसपास के किसानों के लिए सीखने के मंच के रूप में कार्य करता है, जहां मल्चिंग, अंतवर्ती फसल, बागवानी एकीकरण तथा पशु आधारित प्राकृतिक आदान निर्माण का नियमित प्रदर्शन किया जाता है। किसान यहां आकर प्राकृतिक खेती की तकनीकों को व्यावहारिक रूप से समझते एवं अपनाते हैं। यह नवाचार केंद्र संसाधन सहायता इकाई के रूप में भी कार्य करता है। आसपास के किसानों को प्रारंभिक स्तर पर जीवामृत, घनजीवामृत एवं अन्य प्राकृतिक आदानों की छोटी मात्रा उपलब्ध करवाई जाती है, ताकि वे धीरे-धीरे स्वयं आदान तैयार करने में आत्मनिर्भर बन सकें। इससे किसान-से-किसान सीखने की प्रक्रिया को मजबूती मिली है तथा क्षेत्र में प्राकृतिक खेती को व्यापक स्तर पर बढ़ावा मिला है।

फसल प्रणाली के अंतर्गत वे गेहूं एवं बाजरा जैसी खाद्यान्न फसलें, मूंग एवं चना जैसी दलहनी फसलें तथा सरसों जैसी तिलहनी एवं नकदी फसलें उगाते हैं। खाद्यान्न एवं दलहनी फसलों की मिश्रित खेती से उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ मृदा की उर्वरता एवं पोषक संतुलन में भी सकारात्मक सुधार देखने को मिला है।

बागवानी आधारित प्राकृतिक खेती

श्री धर्मवीर खीचड ने प्राकृतिक खेती के अंतर्गत फसलों के साथ बागवानी को जोड़ते हुए एक सफल विविधीकृत कृषि मॉडल विकसित किया है। वे अपने खेत पर विभिन्न प्रकार की सब्जियों एवं फल फसलों का उत्पादन करते हैं, जिनमें खीरे की विभिन्न किस्में, पत्तागोभी, गाजर, मूली, चुकंदर, हरी मिर्च, भिंडी, पालक, फूलगोभी एवं ब्रोकली प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त वे बेर, बेल, संतरा, अमरूद तथा ड्रैगन फ्रूट जैसे फलदार पौधों की भी प्राकृतिक तरीके से खेती कर रहे हैं।

इन्होंने फसल उत्पादन, बागवानी, टिकाऊ कृषि एवं लाभप्रदता को समन्वित करते हुए एक संतुलित प्राकृतिक खेती मॉडल तैयार किया है। खरीफ मौसम में वे बाजरा के साथ मूंग, लोबिया, मोठ एवं विभिन्न प्रकार के खीरे की मिश्रित खेती करते हैं, जिससे भूमि का बेहतर उपयोग होने के साथ उत्पादन में विविधता एवं जोखिम में कमी आती है। वहीं रबी मौसम में सरसों, जौ, गेहूं एवं चना जैसी फसलों की खेती की जाती है।

नवाचार के रूप में इन्होंने सेम के साथ शलगम, पालक, गाजर एवं मूली की अंतरवर्तीय खेती अपनाई है, जिससे प्रति इकाई क्षेत्र अधिक उत्पादन एवं अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है। इनके खेत पर उत्पादित सब्जियां एवं अन्य उत्पाद सीधे स्थानीय बाजार में बेचे जाते हैं, जिससे इन्हें बेहतर मूल्य एवं अधिक लाभ प्राप्त होता है।

व्हापासा

इस तकनीक के अंतर्गत सिंचाई केवल आवश्यकतानुसार तब की जाती है, जब मृदा में पर्याप्त नमी हो, लेकिन वह पूरी तरह जल संतृप्त न हो। इससे मृदा में वायु एवं नमी का संतुलन बना रहता है, जो पौधों की जड़ों के बेहतर विकास में सहायक होता है। व्हापासा तकनीक अपनाने से पौधों की जड़ें गहराई तक फैलती हैं, जल उपयोग दक्षता बढ़ती है तथा सिंचाई जल की खपत में लगभग 30-40 प्रतिशत तक कमी आती है। साथ ही मृदा में लाभकारी सूक्ष्म जीव सक्रिय बने रहते हैं, जिससे फसलें सूखे जैसी परिस्थितियों को भी बेहतर ढंग से सहन कर पाती हैं।

विपणन

प्राकृतिक खेती से उत्पादित 'रसायन मुक्त' फसलों एवं सब्जियों की बिक्री साप्ताहिक बाजारों, कृषि प्रदर्शनियों एवं स्थानीय मेलों के माध्यम से सीधे उपभोक्ताओं को की जाती है। ताजगी, गुणवत्ता एवं उत्पाद की पारदर्शिता बनाए रखते हुए उपभोक्ताओं का विश्वास अर्जित किया गया है। उपभोक्ताओं को खेत पर आकर सीधे खरीद करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे किसान एवं उपभोक्ता के बीच सीधा संबंध विकसित हुआ है।

इसके अतिरिक्त ऑर्गेनिक फूड स्टोर, स्थानीय रिटेलर एवं सहकारी दुकानों के माध्यम से भी उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग को देखते हुए विभिन्न ऑर्गेनिक आउटलेट्स के साथ समन्वय स्थापित किया गया है।

प्रमुख प्राकृतिक आदानों की उपयोगिता

घनजीवामृत

इसे तैयार करने के लिए 100 कि.ग्रा. गोबर, 1 कि.ग्रा. गुड़, 1 कि.ग्रा. दाल का आटा एवं एक मुट्ठी उपजाऊ मृदा का उपयोग किया जाता है। सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलाकर 2-3 दिन छाया में रखा जाता है तथा प्रतिदिन पलटा जाता है। इसका उपयोग फसलों की जड़ों के पास मृदा में डालने के लिए किया जाता है, जिससे लाभकारी सूक्ष्म जीवों की सक्रियता बढ़ती है।

दशपर्णी अर्क

यह प्राकृतिक कीट नियंत्रण का प्रभावी उपाय है। इसे नीम, सीताफल, पपीता, अमरूद, अनार, लैंटाना, आक, धतूरा एवं तुलसी जैसी औषधीय पत्तियों, हरी मिर्च, लहसुन, गौमूत्र एवं गुड़ के मिश्रण से तैयार किया जाता है। 15-20 दिनों तक किण्वन के बाद इसे 1:10 अनुपात में पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाता है, जो चूसक एवं पत्ती खाने वाले कीटों के नियंत्रण में उपयोगी है।

अग्निअस्त्र

इसे तैयार करने हेतु गौमूत्र, नीम की पत्तियां एवं बीज, हरी मिर्च और लहसुन का उपयोग किया जाता है। मिश्रण को उबालकर छानने के बाद इसका प्रयोग इल्ली, फल छेदक एवं पत्ती खाने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

नीमास्त्र

इसे गौमूत्र, नीम की पत्तियों एवं बीज तथा पानी से तैयार किया जाता है। 24 घंटे तक किण्वन के बाद इसका छिड़काव एफिड, जेसिड एवं सफेद मक्खी जैसे चूसक कीटों को नियंत्रित करने में प्रभावी पाया गया है।

मल्चिंग

श्री धर्मवीर खीचड प्राकृतिक खेती में मृदा की नमी संरक्षण एवं उर्वरता बनाए रखने के लिए मल्चिंग तकनीक का प्रभावी उपयोग करते हैं। सूखी मल्चिंग के अंतर्गत वे फसल अवशेष, भूसा एवं सूखी पत्तियों को मृदा की सतह पर फैलाते हैं, जिससे भूमि में नमी लंबे समय तक सुरक्षित रहती है और सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। विशेष रूप से सरसों के भूसे का उपयोग मृदा ढकने के लिए किया जाता है, जो मृदा को गर्मी एवं नमी के अत्यधिक नुकसान से बचाता है। इसके साथ ही वे लोबिया एवं ढैंचा जैसी हरी खाद फसलों के माध्यम से जीवित मल्चिंग अपनाते हैं, जिससे मृदा में जैविक पदार्थ एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ती है। मल्चिंग तकनीक के उपयोग से खेतों में खरपतवारों का प्रकोप कम होता है, मृदा का तापमान संतुलित बना रहता है तथा लाभकारी सूक्ष्म जीवों की सक्रियता में वृद्धि होती है। इससे मृदा की गुणवत्ता में सुधार होने के साथ फसलों की वृद्धि एवं उत्पादन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते हुए सोशल मीडिया, व्हाट्सएप समूह एवं स्थानीय सामुदायिक नेटवर्क के जरिए उत्पादों का प्रचार-प्रसार किया जाता है। आसपास के कस्बों एवं शहरों में उपभोक्ताओं तक होम डिलीवरी की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाती है।

सामूहिक विपणन को बढ़ावा देने के लिए किसान उत्पादक समूह एवं प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के समूहों के साथ मिलकर कार्य किया जा रहा है। इससे परिवहन लागत कम होने, उत्पाद की नियमित आपूर्ति बनाए रखने एवं बाजार में बेहतर मोलभाव क्षमता प्राप्त करने में सहायता मिली है।

सारणी: प्राकृतिक खेती मॉडल से प्राप्त उत्पादन एवं आय का विवरण

फसल	उत्पादन लागत (रुपये)	सकल आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
बाजरा	18,750	3,60,000	3,41,250
मूंग	19,500	1,25,000	1,05,500
गेहूं	29,500	2,70,000	2,40,500
चना	26,500	89,867	63,533
सरसों	26,500	3,04,960	2,78,460
सब्जियां	1,18,200	4,11,400	2,93,200
फल	1,35,500	6,70,500	5,35,000

प्रभाव

जैविक उर्वरक एवं रासायनिक कीटनाशकों की खरीद की आवश्यकता न होने के कारण गेहूं की उत्पादन लागत में लगभग 52-51 प्रतिशत तक कमी दर्ज की गई है। अधिकांश फसलों में उत्पादन स्तर पारंपरिक खेती के समान बना हुआ है। वहीं कम लागत तथा प्राकृतिक उत्पादों को उच्च बाजार मूल्य मिलने के कारण किसानों को अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है।

मूल्य संवर्धन के अंतर्गत सरसों की फसल का प्रसंस्करण कर प्राकृतिक सरसों तेल तैयार किया जाता है, जिससे उत्पाद का बाजार मूल्य बढ़ने के साथ किसानों को अतिरिक्त लाभ प्राप्त हो रहा है।

प्राकृतिक खेती पद्धतियों को सफलतापूर्वक अपनाने के बाद श्री धर्मवीर खीचड आसपास के किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर उभरे हैं। इनकी सफलता को देखकर अनेक किसान रासायनिक खेती से हटकर पर्यावरण अनुकूल एवं टिकाऊ खेती पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित हुए हैं।

इनके फार्म पर नियमित रूप से खेत प्रदर्शन, फार्म विजिट एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहां किसान प्राकृतिक खेती की तकनीकों को व्यावहारिक रूप से सीखते हैं। इन गतिविधियों से किसानों को कम लागत में टिकाऊ एवं लाभकारी खेती की जानकारी प्राप्त हो रही है।

श्री खीचड एक आदर्श किसान के रूप में कार्य कर रहे हैं, जिन्होंने यह सिद्ध किया है कि बिना रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के भी फसलों की सफल एवं लाभदायक खेती की जा सकती है। इनकी पहल से क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा किसान आत्मनिर्भर एवं पर्यावरण हितैषी कृषि की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

भाकृअनुप की द्विमासिक बागवानी पत्रिका

'फल फूल' जुलाई-अगस्त, 2026 'जैव विविधता विशेषांक' के प्रमुख आकर्षण

- गौण बागवानी फसलों के मूल्यवर्धित उत्पाद
- गुणों से भरपूर केले की विविध प्रजातियां
- पूर्वी भारत में बीजू आम की विविधता का संरक्षण
- लीची की रंग-बिरंगी दुनिया और जैवविविधता का संरक्षण
- विविधता से भरपूर भौगोलिक संकेतक
- पोषण से भरपूर शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रीय फल
- कटहल की उन्नत किस्में सिद्धु और शंकरा से बढ़ती समृद्धि
- अल्प दोहित सब्जियां एवं आनुवंशिक संसाधन विविधता
- सामुदायिक बीज बैंक द्वारा जैवविविधता का सशक्तिकरण
- नवग्रह वाटिका-संस्कृति और पर्यावरण का समन्वित उद्यान
- विदेशी सब्जियों की समन्वित खेती से मिली सफलता
- फल फसलों की विविधता से पोषण और वृद्धि
- एप्पल बेर की उन्नत खेती से आत्मनिर्भरता
- स्तत कृषि की आधारशिला है महिला कृषक

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in